ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

123

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

सबलोग

सितम्बर-अक्टूबर 2023 • मूल्य ₹ 50

हिन्दी का नया नवजागरण

- चीन के आर्थिक विकास का गुब्बारा
- चुनाव आयोग का कठपुतलीकरण
- महिला खेतिहर मजदूरों की दुर्दशा

सबलोग-123

वर्ष 14, अंक 9, सितम्बर-अक्टूबर 2023

प्रकाशन 25.09.2023

ISSN 2277-5897 SABLOG

PEER REVIEWED JOURNAL

सम्पादक

किशन कालजयी

संयुक्त सम्पादक

प्रकाश देवकुलिश

राजन अग्रवाल

ब्यूरो

उत्तर प्रदेश : शिवाशंकर पाण्डेय

मध्यप्रदेश : जावेद अनीस

बिहार : कुमार कृष्णन

उत्तराखण्ड : सुप्रिया रतूड़ी

झारखण्ड : विवेक आर्यन

समीक्षा समिति (Peer Review Committee)

आनन्द कुमार

सुबोध नारायण मालाकार

मणीन्द्र नाथ ठाकुर

आशुतोष

सफदर इमाम कादरी

मधुरेश

आनन्द प्रधान

मंजु रानी सिंह

महादेव टोप्पो

विजय कुमार

आशा

सन्तोष कुमार शुक्ल

अखलाक 'आहन'

प्रबन्ध निदेशक

अभय कुमार झा

सम्पादकीय सम्पर्क

बी-3/44, तीसरा तल, सेक्टर-16,

रोहिणी, दिल्ली-110089

+ 918340436365

sablogmonthly@gmail.com, sablog.in

वेब सहायक : गुलशन कुमार चौधरी

सदस्यता शुल्क

एक अंक : 40 रुपए–वार्षिक : 450 रुपए

द्विवार्षिक : 900 रुपए – आजीवन : 5000 रुपए

सबलोग

खाता संख्या-49480200000045

बैंक ऑफ बड़ौदा, शाखा-बादली, दिल्ली

IFSC-BARB0TRDBAD

(Fifth Charecter is Zero)

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिन्टर्स, 556 जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका अव्यावसायिक और सभी पद अवैतनिक।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिये न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

हिन्दी का नया नवजागरण

हिन्दी चिन्तन जगत में नये नवजागरण की सम्भावना : **मणींद्र नाथ ठाकुर** 4

वैचारिक स्वराज की भाषा : **अम्बिकादत्त शर्मा** 7

नये इतिहास की जरूरत : **देवेन्द्र चौबे** 12

भारतीय मानस की बहुमुखी मुक्ति : **रमाशंकर सिंह** 15

भारत में मातृभाषाओं का संकट : **संजय द्विवेदी** 19

हिन्दी पट्टी की नयी स्त्रीवादी सामाजिकी : **सुप्रिया पाठक** 21

हिन्दी सिनेमा में नवाचार : **रक्षा गीता** 24

हमारा समय और हिन्दी : **अच्युतानंद मिश्र** 27

कथेतर गद्य की नयी रोशनी : **दिव्यानंद** 29

समकालीन भक्ति और रीति आलोचना में यौनिकता : **अजय यादव** 31

सृजनलोक

पाँच कविताएँ : **पूजा यादव,** टिप्पणी : **आशीष त्रिपाठी** 33

विशेष लेख

गंगा-जमुनी तहजीब का सरस्वती-विलोप : **विनोद शाही** 35

गाँधी स्मरण

गाँधी और लोकतन्त्र : **आलोक टण्डन** 40

गाँधी की कलादृष्टि : **अरुण कुमार त्रिपाठी** 42

सत्याग्रह का दर्शन : **अनिल किशोर सहाय** 44

गाँधीवादी और राजनीति : **इस्लाम हुसैन** 44

राज्य

उत्तर प्रदेश / घोसी उपचुनाव के निहितार्थ : **शिवाशंकर पांडेय** 47

बिहार / बुजुर्गों की उपेक्षा : **अमिता** 49

हिमाचल प्रदेश / तबाही के बावजूद : **कुलभूषण उपमन्यु** 51

स्तम्भ

चतुर्दिक / आगे गहरी खाई भी है : **रविभूषण** 52

यत्र-तत्र / किस्सागोई की सादगी : **जय प्रकाश** 55

कथित-अकथित / चीन के आर्थिक विकास का गुब्बारा : **धीरंजन मालवे** 58

तीसरी घण्टी / रंगमंच में गैरबराबरी और भेदभाव : **राजेश कुमार** 60

कविताघर / कविता करती है बहुत सारे काम : **प्रियदर्शन** 63

विविध

समसामयिक / मनमोहन सिंह के इंटरव्यू का आशय : **प्रेम सिंह** 65

मुद्दा / चुनाव आयोग का कठपुतलीकरण : **प्रमोद मीणा** 67

स्त्रीकाल / महिला खेतिहर मजदूरों की दुर्दशा : **विक्रम सिंह** 69

साहित्य / परसाई के व्यंग्य साहित्य में भारतीय राजनीति : **इतु सिंह** 72

पारिस्थितिकी / पाखण्ड का पर्यावरण : **वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली** 75

संस्कृति / नये भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियाँ : **राकेश भारतीय** 77

समाज / दंगे का दिमाग : **कर्ण सिंह** 80

लिये लुकाठी हाथ / गाँधीरूपी क्रीम : **गिरीश पंकज** 82

आवरण : शशिकान्त सिंह

अगला अंक : चुनाव किस करवट

हिन्दी चिन्तन जगत में नये नवजागरण की सम्भावना

मणींद्र नाथ ठाकुर

मुझे पता है कि नवजागरण शब्द इतिहास के खास काल के सन्दर्भ में रूढ़ हो गया है। यह भी पता है कि पश्चिम में आया नवजागरण पूरी दुनिया के लिए मानक हो गया है। जब कभी भी हम नवजागरण की बात करते हैं तो इसी मानक से उसकी तुलना की जाती है। लेकिन यहाँ मेरा आग्रह है कि हम इस मानक को थोड़ी देर के लिए अलग रख दें और बदलाव की जो प्रक्रिया हिन्दी जगत में चल रही है उसे नये नवजागरण के रूप में देखें, जिसका स्वरूप अभी बिलकुल स्पष्ट नहीं है।

हर भाषा का अपना एक समाजशास्त्र होता है। उसका एक दार्शनिक पक्ष भी होता है। भाषा समाज के सामूहिक चेतना का वाहक होती है। समाज में होने वाले परिवर्तनों की पूर्व सूचना उस भाषा में रचे गये साहित्य से मिलती है। भारत की स्वतन्त्रता को यदि आप समझना चाहते हैं और उसके आने की धमक को सुनना चाहते हैं तो निश्चित् रूप से उस समय के साहित्य से आपको सहायता मिल सकती है। इसलिए आने वाले समय की पूर्व सूचना के लिए आज के साहित्य को पढ़ने समझने की जरूरत भी है। हिन्दी भाषा का रचना संसार हिन्दी के चिन्तन जगत का इतना प्रतिनिधित्व तो करता ही है कि हम समाज के अलग-अलग स्तरों पर चल रही प्रक्रियाओं को उससे समझ सकते हैं।

आज के हिन्दी समाज में क्या चल रहा है? कुछ बिखरे तारों को जोड़ कर मैं आपके सामने एक सवाल रखना चाहता हूँ। मुझे स्वयं उसका उत्तर नहीं मालूम है। सबसे पहले यह समझें कि आज इस सवाल को उठाने का क्या कारण है? ऐसी कौन सी खास बात है आज के समय में कि हिन्दी चिन्तन जगत में चल रही प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश की जाए? पहली बात तो यह है कि पिछले कुछ वर्षों में भारतीय समाज परिवर्तन की तीव्र प्रक्रिया से गुजरा है। नयी आर्थिक नीति आयी, वैश्वीकरण आया, उत्तर-आधुनिकतावाद आया, अस्मिता की राजनीति आयी और इसके साथ ही सामाजिक और राजनैतिक प्रक्रियाओं में भी काफी उथल-पुथल आया। हम जहाँ हैं उससे आगे की दिशा क्या है? इस विषय पर विमर्श की खास जरूरत है। हम कहाँ से यहाँ तक आये हैं इसे लेकर तो बहुत चिन्तन चलता रहता है। उसका एक पक्ष तो यही है कि हम जहाँ हैं उसे समझा जाए। लेकिन दूसरा पक्ष यह भी होता है कि हम जहाँ जाना चाहते हैं उसके लिए हम जहाँ से आये हैं उससे दिशा निर्धारित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन हम जहाँ हैं और हम जिस ओर जा रहे हैं इसका विश्लेषण हम जहाँ से आये हैं इससे ठीक-ठीक नहीं हो सकता है। कई बार इसका उपयोग हम जहाँ हैं और जिधर जा रहे हैं उस परिदृश्य को धुँधला करने के लिए भी किया जाता है। जो लोग हमें कहीं और ले जाना चाहते हैं वे ही उसे स्पष्ट नहीं होने देने के लिए हमें कुछ और रास्ते दिखलाते हैं।

ऐसे में हम जहाँ हैं और जिस दिशा में जा रहे हैं इसे समझने का क्या उपाय हो सकता है? उसका समझना जरूरी है क्योंकि फिर हम तय कर सकते हैं कि हमें अपनी मनचाही

लेखक समाजशास्त्री और जे.एन.यू. में प्राध्यापक हैं।
+919968406430
manindrat@gmail.com